विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी- शुकनासोपदेश, महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या दिनांक- 18/08/2020

अद्याप्यारूढ़मन्दर परिवर्तावर्त भ्रान्ति जनित-संस्कारेव परिभ्रमति। कमलिनी सञ्चरणव्यतिकर लग्न नलिन नाल कण्टकक्षतेव न क्वचिदपि निर्भरमाबध्नाति पदम्।

भावार्थ- (अद्यापि) आज भी (आरूढ़ मन्दर परिवर्तावर्त भ्रान्ति जनित संस्कारेव) मानो मन्दराचल द्वारा घुमाए जाने से उठे हुए भँवर से उत्पन्न भ्रान्ति (भ्रमणशीलता) के संस्कार से अतः (यह लक्ष्मी) (परिभ्रमति) घूमती रहती है। (कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकक्षतेव) कमलिनियों में विचरण के संबन्ध से (मानो) लगे हुए कमलनाल के काँटों से घायल हुई यह (न क्वचिदपि निर्भरमाबध्नाति पदम्)

"Failure comes only when we forget our ideals and objectives and principles." – Jawaharlal Nehru

Scanned with CamScanner

कहीं पर भी दृढ़ता से पैर नहीं रखती।

टिप्पणी- अत्यन्त प्राचीन काल में देवताओं और असुरों ने अमृत की प्राप्ति के लिए क्षीरसागर का मन्थन किया था। इसके लिए मन्दराचल को मन्थन यष्टि बनाया गया। इसी मन्थन से ही अन्यान्य रत्नों के साथ लक्ष्मी का जन्म हुआ। कवि उत्प्रेक्षा करता है कि मन्दराचल के घूमने से क्षीरसागर के जल में जो भँवर इसके जन्मकाल में उत्पन्न हुआ था, उसके चक्कर का संस्कार इसमें अब तक बना हुआ है। अन्य तृणादि वस्तुएँ भी एकबार भँवर में पड़कर उससे मुक्त होकर भी चिरकाल तक घूमती रहती हैं। इस प्रकार यहाँ हेतूत्प्रेक्षा अलंकार है। इस सम्बन्ध में कवि की दूसरी उत्प्रेक्षा यह है कि कमलवन में विहार करते हुए कमलनाल के काँटे इसके पैरों में गड़े उनके कारण आज भी मानो कहीं टिककर पैर नहीं रखती। लक्ष्मी का पद्मवन में निवास कवि प्रसिद्ध है। पद्मा उसका पर्यायवाची ही है।

पदव्याख्या- आरूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारा = मन्दरेण परिवर्तः (तृ० तत्पु०) मन्दरपरिवर्तेन आवर्तः (तृ० तत्पु०) आरूढो यो मन्दरपरिवर्तावर्तः तस्मात् या भ्रान्तिः (पं० तत्पु०) तया जनितः संस्कारः यस्याः सा (बहु०)।

(कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकक्षता = कमलिनीषु सञ्चरणं कमलिनीसञ्चरणं (स० तत्पु०) तस्य व्यतिकरः (वि + अति + कॄ + अप् ईत्नदोरप् अष्टा० ३. ३. ५७ = सम्बन्ध, संसर्ग)

Date ___/___/_____ Page No.: _____

कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरः (ष० तत्पु०) नलिनानां नालानि नलिननालानि (ष० तत्पु०) नलिननालेषु कण्टकानि नलिननालकण्टकानि (स० तत्पु०) कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरेण लग्नानि नलिन-नालकण्टकानि यस्याः सा (बहु०)।

आबध्नाति = आ + बन्ध् + लट् प्र० पु० ए०।

Scanned with CamScanner